



विश्व पर्यावरण दिवस पर सिलेक्स ने दी चेतावनी

प्रकृति की अनदेखी की, तो भूगर्भ ने पड़ेंगे गंभीर परिणाम

You Nailed it Tripbath!

आज विश्व पर्यावरण दिवस है। हर साल पर्यावरण को सहेजने को लेकर कई तरह के कैपेन बनते हैं, मगर क्या हम सही मायनों में पर्यावरण की रक्षा कर पा रहे हैं? कोरोना काल के कहर और सायकलोन की मार के बाद हम सभी यह सोचने पर मजबूर हुए हैं कि कहीं न कहीं कुदरत हमसे नाराज है। हमने जब फिल्म और टीवी स्टार्स से इस मुद्दे पर बात की, तो उन्होंने ने भी माना कि हमें पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए अपने आस-पास के वातावरण ही नहीं बल्कि पशु, पक्षी और पौधों के पार्टी भी संवेदनशील होना पड़ेगा।

Rekha.khan@timesgroup.com

पशु-पक्षियों को भी इंसानों की तरह ट्रीट करें : अनुष्का शर्मा

पर्यावरण को बचाने के लिए सबसे पहले हमें यह समझने की जरूरत है कि इससे जुड़ी हर चीज को हमें संजाना होगा। जिनका अधिकार इस धरती पर हमारा है, उनका ही पशु, पक्षियों और पौधों का भी है। हम अपने जीवन के सुख के लिए इनका इस्तेमाल नहीं कर सकते। हमें उन्हें भी जीने देना होगा। मैं वर्ल्ड एन्यायसेट डे के मौके पर यही कहना चाहूंगी कि धरती के लिए मेरी यही इच्छा है कि काश हम पौधों और जानवरों को भी इंसानों की तरह कुदरत का अहम हिस्सा मानें। हमें प्रकृति से जुड़ी हर प्रजाति के साथ दया और समानता का वर्तव्य करना होगा, तभी पर्यावरण को बचा सकते हैं।



कोरोना में नहीं बदले, तो कुदरत से भयंकर परिणाम मिलेंगे : अनुपम खेर

इस पूरे कोविड में कुदरत ने हमें जता दिया कि हमारी औकात क्या है? प्रकृति ने हमें इस बात का अहसस दिला दिया कि हमें अपनी हद में रहना होगा, वरना इससे भी ज्यादा भयंकर परिणाम हो सकते हैं। एक छोटे से वायरस ने हमको जू का जानवर बना दिया है। हम जू में सलाकलों के पीछे कैद हैं और मोर तथा दूसरे प्राणी हमारे शहर की सड़कों पर आजादी से घूम रहे हैं। इतना साफ और नीला आसमान कभी नजर नहीं आया, जितना इन दिनों दिख रहा है। समुंद्र में वेल्स नजर आ रही हैं। मतलब हमी लोगों ने उल्टा मचाया हुआ था। लोकडाउन ने हमें सिखाया कि कि किसी भी वक्त पर से निकलने की जरूरत नहीं। दो-चार गाड़ियां भी आकश्यक नहीं। मुझे लगता है अपनी जरूरतों को सीमित और संयमित करके हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। गांरी न फैलाना, प्लास्टिक का इस्तेमाल न करना, पानी और बिजली को बचत करना वैसिक चीजें हैं, जिनसे हम पर्यावरण को बचा सकते हैं।



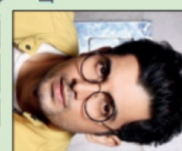
पर्यावरण को बचाने के लिए पशु, पक्षी और पौधे बचाने होंगे : मोना सिंह

हमने इतना ज्यादा प्रदूषण और कचरा फैला दिया कि प्रकृति कब तक सहती? एक बार तो उसने फटना ही था और तो फट पड़ी। दिल्ली में वाँकेंगे आ गंगा, कोलकाता में सायकलोन, मुंबई में तूफान, ये सब तो होना ही था। हमें मरर अर्थ की इजाजत करना सीखना होगा। कुछ भी ग्राटेड नहीं लेना चाहिए। देश और दुनिया का नागरिक होने के नाते ये हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम धरती को साफ रखें। सबसे पहले तो प्लास्टिक बैन कीजिए। नल से बल्ले पानी को थोकरिए। सड़कों पर गाड़ियों का जमावड़ा कर धूवा निकालने से बेहतर है, सायकिल या पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करें। केरला में प्रेमेन्ट हाथी के साथ जो कुछ हुआ, वह अमानुषी था। आपको पर्यावरण को बचाने के लिए पौधे, पशु और पक्षियों को बचाना होगा।



घरों में पौधे और सब्जियां उगानी होंगी : शरद मल्होत्रा

इंसान प्रकृति का गलत इस्तेमाल करता आया है और इसे टेकन फॉर ग्राटेड समझता आया है। बड़े शहरों में हम प्रदूषण को काबू करने के बजाए और पेड़ और जंगल काट रहे हैं। इसलिए आज प्रकृति ने अपना बदला चुद लिया है और हम सबको अपने घरों में बैठा दिया है। हम सभी को प्रकृति की हिफाजत करने के लिए जिम्मेदारी उठानी चाहिए। हमें पेड़ों को काटने के बजाए और पेड़ उगाने चाहिए। हम सबको अपने घरों में फल और सब्जियां उगानी चाहिए, जो हमारी सेहत के लिए फायदेमंद साबित होंगी।



पर्यावरण को नुकसान पहुंचानेवाले लोगों को मिले कड़ी सजा : विविधन हिसेना

हम पर्यावरण को हलक में नहीं ले सकते हैं। हमें उन लोगों के लिए सख्त कार्रवाई और जुर्माने का उपाय करना चाहिए, जो प्रकृति को नुकसान पहुंचाते हैं और प्रदूषण फैलाते हैं। जिनने लोग आज भी सूरज और मीला कचरा मिलताकर सड़कों पर फेकते हैं। इन सब पर रोक लगानी चाहिए। हमें पर्यावरण और जानवरों के प्रति कुरल बंद करनी चाहिए। आज दुनिया भर में पेड़ कम होते जा रहे हैं। जितना हो सके उतना हमें पेड़ के बजाए ऑनलाइन चीजों का इस्तेमाल करना चाहिए।



पर्यावरण को बचाने का ढोंग करना छोड़ना होगा: पंकज त्रिपाठी

पर्यावरण की रक्षा के लिए हमें सबसे पहले साथ में रहने की आदत लेनी चाहिए, जिसे हम को-एजिस्टेंस कहते हैं। हम सभी प्रकृति का हिस्सा हैं, मगर मनुष्य एकमात्र ऐसा है, जिसके पास हिमांग है और इमोजेनेशन है। हम अपनी ग्राथ के चक्कर में कहीं जानवरों और पेड़-पौधों का सत्यानाश न का दें। हमारे लिए जितना जरूरी कपड़ों और कारखाना है, उतने ही जरूरी जानवर हैं। हमने बचपन में इकोलॉजी पढ़ी थी और उसमें हमने एक चक्र के बारे में पढ़ा था जो मुझे लगता है कि प्रकृति के उस चक्र के बारे में साबित कर रहा है, पेंड काट कर रहे हैं। हमारी दुनिया में पेड़, पौधों के साथ-साथ सोन-बिड़कु, पर्यावरण को बचाने होकर काम करने का ढोंग बंद करना होगा।



लॉकडाउन के बाद नेयर संग ज्यादाती नहीं कर पाएंगे :-आहना कुमरा

मुझे लगता है कि बीते सालों में हम खूद को लेकर इतने स्थायी हो गए हैं कि हमने अपने एन्यायसेट को जरूरत अनदेखी कर दी है और उसी का परिणाम हमारे सामने आ रहा है। मुझे लगता है, जो लोग एन्यायसेट, एनिमस और प्लास्टिक के लिए फल करते हैं, हम सभी को उनका साथ देना चाहिए। जब आप सोशल मीडिया पर पनो काम या खुरद के बारे में लिखते हैं, तो पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने वाली बातें भी पोस्ट करनी चाहिए। वैसे इस लॉकडाउन में कान्नी लोगों को अक्ल आ गई और अब जब लॉकडाउन खतम होगा, तो लोग नेयर के साथ इतनी ज्यादाती नहीं कर पाएंगे।

